Chapter 7 उसकी माँ CLASS 11TH HINDI | REVISION NOTES ANTRA

उसकी माँ पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र जी द्वारा रचित अत्यंत मार्मिक एवं क्रांतिकारी विचारों की कहानी है। इस कहानी में लेखक एक जमींदार है जिसके यहाँ एक दिन पुलिस आती है और अपनी पॉकेट से तस्वीर निकाल उसे दिखाती है। लेखक उस तस्वीर वाले का नाम लाल बताता है जो कि उन्ही के पड़ोस में रहता है। लाल के पिता का देहांत हुए सात -आठ वर्ष हो चुके हैं। अब उसके परिवार में उसकी माँ जानकी और वह ही बचे हैं। लाल के पिता लेखक के यहाँ मैनेजर थे जो कि समय समय पर कुछ पैसा लेखक के पास रखवा दिया करते थे। आजकल उनके परिवार का पालन – पोषण उन्ही के पैसों से हो रहा है। लाल के सम्बन्ध में यह जानकारी देकर लेखक पुलिस से इस छानबीन का कारण पूछता है तो वे केवल इतना बताते हैं कि वे सरकारी मामला है अतः इसके बारे में वे ज्यादा नहीं बता सकेंगे।

लेखक लाल के सम्बन्ध में बड़ा बेचैन होकर उसकी माँ के पास जाता है तथा यह बताता है कि अंग्रेज पुलिस आजकल लाल की पूछताछ कर रही है। लेखक लाल को समझाते है कि तुम्हारा यह समय पढ़ाई का है अतः पहले पढ़ाई का कर्म पूरा करने के बाद तथा अपना उद्धार करने के बाद ही सरकार के सुधार या विरोध का विचार करो। लेकिन लाल लेखक के जमींदारी रूप का विरोध कर उन्हें सच्चा राज भक्त और स्वयं को सच्चा राष्ट्रभक्त कहता है। उसका मानना है कि जो व्यक्ति ,समाज या राष्ट्र किसी अन्य व्यक्ति ,समाज या राष्ट्र के नाश पर जीता हो – उसका सर्वनाश होना चाहिए। इस सर्वनाश के लिए वह आवश्यकता पड़ने पर षड्यन्त्र ,विद्रोह एवं हत्या करने को भी तैयार है। ऐसे विचार सुन लेखक को लाल के सम्बन्ध में चिंता होने लगती है।

कुछ दिनों के बाद लेखक अपनी पत्नी और लाल की माँ के बीच चलती वार्तालाप को सुनता है। लाल की माँ लेखक को बताती है कि उसके बेटे की मित्र मण्डली नित्य प्रति उसके घर पर इक्कठी होती है। लाल के मित्रों में एक बंगड़ नाम का लड़का है जो कि बहुत तगड़ा और हँसमुख प्रवृत्ति का है। वह लाल की बूढ़ी माँ को भारत माता के रूप में मानता है। वह कहता है कि हे माँ सर तेरा हिमालय ,माथे की बड़ी रेखायें गंगा और यमुना नदी है ,नाक विंध्याचल पर्वत के समान है ,ठुड्डी कन्याकुमारी है ,छोटी बड़ी झुरियाँ पहाड़ और नदियाँ हैं। ऐसा कहकर वह मुझे भारत माता मानकर गले से लगा लेता है जिससे सब हँसने लगते हैं। इन्ही में एक लड़का उत्तेजित होकर अंग्रेजी परतंत्रता का विरोध करता ,दूसरी सरकारी प्रशासन प्रणाली को गाली देता जबकि एक अन्य मित्र प्रकृति प्रदत्त स्वतंत्रता छीनने वाले अंग्रेजी सत्ता का विरोध करता। इस प्रकार सभी सरकार के खिलाफ बातें करते और आपस में कुछ न कुछ रणनीति बनाने पर विचार करते रहते।

लेखक कुछ दिन के लिए कहीं से घूमकर आते हैं। इसी बीच उसे आते ही सूचना मिलती है कि लाल के यहाँ छापे मारे गए और तलाशी करने पर उसके यहाँ से पिस्तौल और कारतूस प्राप्त किया गया। लाल और उसके मित्रों को गिरफ्तार कर उनके विरुद्ध हत्या ,षड्यन्त्र ,सरकारी राज्य उलटने की चेष्टा का आरोप लगाया है। इन चारों पर मुकदमा चला। इनके विरुद्ध गुप्त समितियां निर्धारित की गयी। लेकिन इन लड़कों की पैरवी करने वाला कोई नहीं था। लाल की माँ ने बहुत कोशिश की लेकिन अंततः ऊँची अदालत ने लाल और बंगड़ समेत चारों मित्रों को फाँसी तथा अन्य दस को दस वर्ष से सात वर्ष की सजा सुनाई। लाल की माँ निराश अवश्य हो गयी थी लेकिन फिर भी वह जेल में जाकर उन बच्चों की सहायता करती है और उन्हें अच्छा भोजन देती है। लाल के पकड़े जाने के बाद से ही सभी लोग लाल की माँ से दूर रहने लगते हैं। यहाँ तक कि लेखक भी बड़ी सावधानी के साथ ही लाल की माँ से दूर रहने लगते हैं। यहाँ तक कि लेखक भी बड़ी सावधानी के साथ ही लाल की माँ से बात करता है। लेखक का मन लाल की माँ से जुड़ा हुआ था ,लेकिन पुलिस का ध्यान आते ही वह अपने कदम पीछे रख लेता।

https://www.evidyarthi.in/

एक दिन लाल की माँ लेखक की पत्नी के साथ उनके घर आती है। लाल की माँ के हाथ में एक पत्र था जिसमें लाल ने लिखा था कि माँ ,जिस दिन तुम्हे यह पत्र प्राप्त होगा उस दिन सुबह मेरा जीवन समाप्त हो चुका होगा। मैंने जानबूझकर तुम्हारे पीछे से मरना स्वीकार किया। मैं विधाता से यही प्रार्थना करता हूँ कि जन्म जन्मान्तर तक तुम ही मेरी माँ बनो। " पत्र समाप्त कर लेखक लाल की माँ को जडवत देखता है। लाल की माँ बिना कुछ कहे घर चली जाती है। कुछ दिन बाद लेखक को अपने नौकर से पता चलता है कि लाल के घर में ताला लगा हुआ है। लाल की माँ हाथ में पुत्र की चिट्ठी लिए दरवाजे पर मरी हुई है।

उसकी मां कहानी का प्रमुख पात्र लाल

लाल उसकी माँ कहानी का प्रमुख पात्र है जो कि स्वतंत्रता प्रेमी नवयुवक है। इसमें आक्रोश ,विद्रोह एवं क्रोध का भाव कूट कूट कर भरा हुआ है। लाल स्वतंत्रता प्रेमी ऐसे नवयुवकों का प्रतिनिधित्व कर रहा है जो सरकारी अत्याचार का विरोध कर क्रांति के मार्ग पर निकल पड़े हैं। लाल जैसे असंख्य युवा स्वतंत्रता आन्दोलन में कूदकर भारत माता को आजाद कराने के भाव मन में भरे रखते हैं। ऐसे युवा अपनी तनिक भी परवाह नहीं करते तथा भारत को माँ मान कर उनकी सेवा में निरस्त रहते हैं।

लाल के चरित्र का सबसे उज्जवल पक्ष उसके देशभक्ति के भाव में निहित में है। उसमें अपनी माँ के प्रति भी पूर्ण आदर भाव एवं स्नेह है ,इसी कारण फाँसी पर लटकने से पूर्व वह माँ से नहीं मिलता क्योंकि ऐसे समय में माँ से यह दृश्य देखा न जाता और पत्र के माध्यम से अपनी यही इच्छा रखता है कि उसे जन्म जन्मातर तक ऐसे ही माँ मिले। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी के पात्र लाल में बलिदानी ,देश प्रेमी ,माँ भक्त एवं विद्रोही देखी जा सकती है।

जानकी का चरित्र चित्रण

जानकी लाल की माँ है। वह अत्यंत सरल हृदया एवं कुशल गृहणी है। उसका संसार उसके बेटे तक की सीमित है। सादगी पर विश्वास रखने वाली जानकी अपना पूर्ण जीवन एवं उसका सुख दुःख अपने पुत्र पर ही न्योछावर कर देती है। जानकी के मन में पुत्र के प्रति समर्पण भाव के साथ साथ सरलता एवं सादगी भी है। वह मध्यम परिवार की कुशल गृहणी है जो वक्त बेवक्त पुत्र की मार्गदर्शन बनकर भी सामने आती है। लाल और उसके मित्र मंडली को देखकर वह सदैव प्रसन्न रहती है और उनकी देख भाल करती है। लेकिन इसके साथ साथ वह धर्मभीरु और थोड़ी बहुत अंधविश्वासी भी है। वह इतनी भोली है कि सभी की बातें तुरंत मान लेती है। उसका सहृदय मन को कष्ट में नहीं देख पाता है इसी कारण वह लाल के जेल जाने पर हवलदार के सम्मुख गिडगिडाती है। इतना ही नहीं बेटे के फाँसी झूलने पर वह इस दुःख को सह ही नहीं पाती है और अंततः प्राण त्याग देती है। जानकी के ऐसे उदार चरित्र का प्रभाव लेखक पर भी पड़ता है।

उसकी मां कहानी की मूल संवेदना उद्देश्य

स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष में अनेक नवयुवक सर पर कफ़न बाँधे सरकार से टकराने के लिए निकल पड़े थे। इस कहानी का लाल नामक पात्र एक ऐसा ही सिरफिरा नवयुवक है जो अपने स्वार्थ ,घर ,परिवार ,माँ आदि को पीछे छोड़कर भारत माँ को आजाद कराने और देश के भले के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार हो जाता है। उसकी माँ सहृदय बन उसे समझाती भी है लेकिन वह देश की राह में कदम रख निरन्तर आगे बढ़ता जाता है। उसकी माँ कहानी हमें यही प्रेरणा देती है कि हमें भी घर परिवार से ऊपर राष्ट्र को मानना चाहिए तथा राष्ट्र पर विप्पति देखकर उस विप्पति को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार यह कहानी आज के नवयुवकों के प्रेरक बनती है और स्वस्थ मार्ग का निर्देशन करती है।

https://www.evidyarthi.in/

उसकी माँ कहानी के कठिन शब्द अर्थ

मुग्ध – मोहित

दिवाकर – सूर्य

सकपकाया – चकित होना

बगावत – विद्रोह

मर्दक – दबाने वाले

विभूति – वैभव

दिक्कत – कष्ट में

अवाक – चकित

जीर्ण – कमजोर ,फूटा हुआ

आततायी – अत्याचारी

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/